॥ॐ॥

॥ शिव तांडव स्तोत्र सरल भाषा में ॥

जटाटवीगलज्जलप्रवाहपावितस्थले, गलेऽवलम्ब्य लम्बितां भुजङ्गतुङ्गमालिकाम्।
डमड्डमड्डमड्डमन्निनादवड्डमर्वयं, चकार चण्डताण्डवं तनोतु नः शिवः शिवम्॥1॥

जटा-अटवी-गलत्-जल-प्रवाह-पावित-स्थले, गले-अवलम्ब्य लम्बितां भुजंग-तुङ्ग-मालिकाम्
डमड्-डमड्-डमड्-डमत्-निनाद-वड्डमर्वयं, चकार चण्ड-ताण्डवं तनोतु नः शिवः शिवम् ॥1॥

जटाकटाहसम्भ्रमभ्रमन्निलिम्पनिर्झरी, विलोलवीचिवल्लरीविराजमानमूर्धनि ।
धगद्धगद्धगज्जलल्ललाटपट्टपावके, किशोरचन्द्रशेखरे रतिः प्रतिक्षणं मम ॥२॥

SriKubereshwarDham.com

जटा-कटाह-सम्भ्रम-भ्रमत्-निलिम्प-निर्झरी, विलोल-वीचि-वल्लरी-विराजमान-मूर्धनि
धगत्-धगत्-धगज्ज्वलत्-ललाट-पट्ट-पावके, किशोर-चन्द्र-शेखरे रतिः प्रति-क्षणं मम ॥२॥

धराधरेन्द्रनन्दिनीविलासबन्धुबन्धुर, स्फुरद्दिगन्तसन्ततिप्रमोदमानमानसे ।
कृपाकटाक्षधोरणीनिरुद्धदुर्धरापदि, क्वचिद्दिगम्बरे मनो विनोदमेतु वस्तुनि ॥३॥

धरा-धर-इन्द्र-नन्दिनी-विलास-बन्धु-बन्धुर, स्फुरत्-दिग्-अन्त-सन्तति-प्रमोद-मान-मानसे
कृपा-कटाक्ष-धोरणी-निरुद्ध-दुर्धर-आपदि, क्वचित्-दिगम्बरे मनो विनोदम्-एतु वस्तुनि ॥३॥

जटाभुजङ्गपिङ्गलस्फुरत्फणामणिप्रभा, कदम्बकुङ्कुमद्रवप्रलिप्तदिग्वधूमुखे ।
मदान्धसिन्धुरस्फुरत्त्वगुत्तरीयमेदुरे, मनो विनोदमद्भुतं बिभर्तु भूतभर्तरि ॥४॥

जटा-भुजङ्ग-पिङ्गल-स्फुरत्-फणा-मणि-प्रभा, कदम्ब-कुङ्कुम-द्रव-प्रलिप्त-दिक्-वधू-मुखे
मद-अन्ध-सिन्धुर-स्फुरत्-त्वक्-उत्तरीय-मेदुरे, मनो विनोदम्-अद्भुतं बिभर्तु भूत-भर्तरि ॥४॥

सहस्रलोचनप्रभृत्यशेषलेखशेखर, प्रसूनधूलिधोरणी विधूसराङ्घ्रिपीठभूः ।
भुजङ्गराजमालया निबद्धजाटजूटकः, श्रियै चिराय जायतां चकोरबन्धुशेखरः ॥५॥

सहस्र-लोचन-प्रभृति-अशेष-लेख-शेखरः, प्रसून-धूलि-धोरणी विधूसर-अङ्घ्रि-पीठ-भूः
भुजंग-राज-मालया निबद्ध-जाट-जूटकः, श्रियै चिराय जायतां चकोर-बन्धु-शेखरः ॥५॥

॥ॐ॥

ललाटचत्वरज्वलद्धनञ्जयस्फुलिङ्गभा, निपीतपञ्चसायकं नमन्निलिम्पनायकम् ।
सुधामयूखलेखया विराजमानशेखरं, महाकपालिसम्पदेशिरोजटालमस्तु नः ॥६॥

ललाट-चत्वर-ज्वलत्-धनञ्जय-स्फुलिङ्ग-भा, निपीत-पञ्च-सायकं नमत्-निलिम्प-नायकम्
सुधा-मयूख-लेखया विराजमान-शेखरं, महा-कपालि-सम्पद्-शिरो-जटालम्-अस्तु नः ॥६॥

करालभालपट्टिकाधगद्धगद्धगज्ज्वलद्ध, नञ्जयाहुतीकृतप्रचण्डपञ्चसायके ।
धराधरेन्द्रनन्दिनीकुचाग्रचित्रपत्रक, प्रकल्पनैकशिल्पिनि त्रिलोचने रतिर्मम ॥७॥

कराल-भाल-पट्टिका-धगत्-धगत्-धगज्ज्वलत्ध, नञ्जय-आहुति-कृत-प्रचण्ड-पञ्च-सायके
धरा-धर-इन्द्र-नन्दिनी-कुच-अग्र-चित्र-पत्रक, प्रकल्पन-एक-शिल्पिनि त्रि-लोचने रतिः-मम ॥७॥

SriKubereshwarDham.com

नवीनमेघमण्डली निरुद्धदुर्धरस्फुरत्कु, हूनिशीथिनीतमः प्रबन्धबद्धकन्धरः ।
निलिम्पनिर्झरीधरस्तनोतु कृत्तिसिन्धुरः, कलानिधानबन्धुरः श्रियं जगद्धुरंधरः ॥८॥

नवीन-मेघ-मण्डली निरुद्ध-दुर्धर-स्फुरत्कु, हू-निशीथिनी-तमः प्रबन्ध-बद्ध-कन्धरः
निलिम्प-निर्झरी-धरः-तनोतु कृत्ति-सिन्धुरः, कला-निधान-बन्धुरः श्रियं जगत्-धुरंधरः ॥८॥

प्रफुल्लनीलपङ्कजप्रपञ्चकालिमप्रभा, वलम्बिकण्ठकन्दलीरुचिप्रबद्धकन्धरम् ।
स्मरच्छिदं पुरच्छिदं भवच्छिदं मखच्छिदं, गजच्छिदान्धकच्छिदं तमन्तकच्छिदं भजे ॥९॥

प्रफुल्ल-नील-पङ्कज-प्रपञ्च-कालिम-प्रभा, वलम्बि-कण्ठ-कन्दली-रुचि-प्रबद्ध-कन्धरम्
स्मर-च्छिदं पुर-च्छिदं भव-च्छिदं मख-च्छिदं, गज-च्छिदम्-अन्धक-च्छिदं तम्-अन्तक-च्छिदं भजे ॥९॥

SriKubereshwarDham.com

अखर्वसर्वमङ्गलाकलाकदम्बमञ्जरी, रसप्रवाहमाधुरीविजृम्भणामधुव्रतम् ।
स्मरान्तकं पुरान्तकं भवान्तकं मखान्तकं, गजान्तकान्धकान्तकं तमन्तकान्तकं भजे ॥१०॥

अखर्व-सर्व-मङ्गला-कला-कदम्ब-मञ्जरी, रस-प्रवाह-माधुरी-विजृम्भणा-मधुव्रतम्
स्मरान्तकं पुरान्तकं भवान्तकं मखान्तकं, गज-अन्तक-अन्धक-अन्तकं तम्-अन्तक-अन्तकं भजे ॥१०॥

जयत्वदभ्रविभ्रमभ्रमद्भुजङ्गमश्वसद्धि, निर्गमत्क्रमस्फुरत्करालभालहव्यवाट् ।
धिमिद्धिमिद्धिमिध्वनन्मृदङ्गतुङ्गमङ्गल, ध्वनिक्रमप्रवर्तितप्रचण्डताण्डवः शिवः ॥११॥

जयत्-त्वत्-अभ्र-विभ्रम-भ्रमत्-भुजङ्ग-मश्वसद्धि, निर्गमत्-क्रम-स्फुरत्-कराल-भाल-हव्यवाट्
धिमि-द्धिमि-ध्वनन्-मृदङ्ग-तुङ्ग-मङ्गल-ध्वनि-क्रम, प्रवर्तित-प्रचण्ड-ताण्डवः शिवः ॥११॥

srikubereshwardham.com

॥ॐ॥

दृषद्विचित्रतल्पयोर्भुजङ्गमौक्तिकस्रजोर्ग, रिष्ठरत्नलोष्ठयोः सुहृद्विपक्षपक्षयोः ।
तृणारविन्दचक्षुषोः प्रजामहीमहेन्द्रयोः, समप्रवृत्तिकः कदा सदाशिवं भजाम्यहम् ॥१२॥

दृषद्-विचित्र-तल्पयोः-भुजङ्ग-मौक्तिक-स्रजोः, गरिष्ठ-रत्न-लोष्ठयोः सुहृत्-विपक्ष-पक्षयोः
तृण-अरविन्द-चक्षुषोः प्रजा-मही-महेन्द्रयोः, सम-प्रवृत्तिकः कदा सदाशिवं भजामि-अहम् ॥१२॥

कदा निलिम्पनिर्झरीनिकुञ्जकोटरे वसन्वि, मुक्तदुर्मतिः सदा शिरःस्थमञ्जलिं वहन् ।
विलोललोललोचनो ललामभाललग्नकः, शिवेति मन्त्रमुच्चरन्कदा सुखी भवाम्यहम् ॥१३॥

कदा निलिम्प-निर्झरी-निकुञ्ज-कोटरे वसन्वि, मुक्त-दुर्मतिः सदा शिरः-स्थ-मञ्जलिं वहन्
विलोल-लोल-लोचनो ललाम-भाल-लग्नकः, शिव-इति मन्त्रम्-उच्चरन् कदा सुखी भवामि-अहम् ॥१३॥

SriKubereshwarDham.com

इमं हि नित्यमेवमुक्तमुत्तमोत्तमं स्तवं, पठन्स्मरन्ब्रुवन्नरो विशुद्धिमेतिसंततम् ।
हरे गुरौ सुभक्तिमाशु याति नान्यथा गतिं, विमोहनं हि देहिनां सुशङ्करस्य चिन्तनम् ॥१४॥

इमं हि नित्यम्-एव-मुक्तम्-उत्तमोत्तमं स्तवं, पठन्-स्मरन्-ब्रुवन्-नरः विशुद्धिम्-एति-संततम्
हरे गुरौ सु-भक्तिम्-आशु याति न-अन्यथा गतिं, विमोहनं हि देहिनां सु-शङ्करस्य चिन्तनम् ॥१४॥

पूजावसानसमये दशवक्त्रगीतं, यःशम्भुपूजनपरं पठति प्रदोषे ।
तस्य स्थिरां रथगजेन्द्रतुरङ्गयुक्तां, लक्ष्मीं सदैव सुमुखीं प्रददाति शम्भुः ॥१५॥

पूजा-अवसान-समये दश-वक्त्र-गीतं, यः-शम्भु-पूजन-परं पठति प्रदोषे
तस्य स्थिरां रथ-गज-इन्द्र-तुरङ्ग-युक्तां, लक्ष्मीं सदैव सु-मुखीं प्रददाति शम्भुः ॥१५॥

SriKubereshwarDham.com

इमं हि नित्यमेव मुक्तमुत्तमोत्तमं स्तवं, पठन्स्मरन्ब्रुवन्नरो विशुद्धिमेति संततम्।
हरे गुरौ सुभक्तिमाशु याति नान्यथा गतिं, विमोहनं हि देहिनां सुशङ्करस्य चिंतनम् ॥१६॥

इमम्-हि-नित्यम्-एव-मुक्त-उत्तमोत्तमम्-स्तवम्प, ठन्-स्मरन्-ब्रुवन्-नरः-विशुद्धिम्-एति-संततम्
हरे-गुरौ-सुभक्तिम्-आशु-याति-न-अन्यथा-गतिम्वि, मोहनम्-हि-देहिनाम्-सुशङ्करस्य-चिन्तनम् ॥१६॥

पूजावसानसमये दशवक्त्रगीतं, यः शम्भुपूजनपरं पठति प्रदोषे।
तस्य स्थिरां रथगजेन्द्रतुरङ्गयुक्तां, लक्ष्मीं सदैव सुमुखिं प्रददाति शम्भुः ॥१७॥

पूजा-अवसान-समये-दशवक्त्र-गीतम्यः, -शम्भु-पूजन-परम्-पठति-प्रदोषे
तस्य-स्थिराम्-रथ-गज-इन्द्र-तुरङ्ग-युक्ताम्ल, क्ष्मीम्-सदैव-सुमुखीम्-प्रददाति-शम्भुः ॥१७॥

srikubereshwardham.com